शोध मंथन

हिन्दी शोध (पत्रिका)

शोध मंथन में समाज, साहित्य, कला, राजनीति, अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान, गृहविज्ञान, पुस्तकालय विज्ञान, पत्रकारिता शिक्षा, कानून, इतिहास, दर्शन, महिला शिक्षा, महिला जगत, पुरूष, बाल जगत आदि के जुड़े विषय पर उत्कृष्ट, मौलिक, तरूपरक, वैज्ञानिक पद्धति से युक्त व प्रासंगिक उच्चस्तरीय शोधपत्रों को प्रकाशित किया जाता है।

प्रधान सम्पादकः

डॉ0 (के0) अन्जुला राजवंशी,

एसो0 प्रो0, आर0 जी0 पी0जी0 कॉलिज, मेरठ

Email Id: *shodhmanthaneditor@gmail.com*

सम्पादकीय समिति

प्रो0 श्रीकांत मिश्रा, विभाग प्रमुख, दर्शनशास्त्र, ए पी एस विश्वविद्यालय, रेवा,

डॉ0 विशेष गुप्ता, सेवानिवित प्रो0, एम0एच0पी0जी0 कॉलिज, मुरादाबाद. *guptavishesh56@gmail.com*

डॉ0 सत्यवीर सिंह, असि0 प्रो0,, चौ0 जी0 एस0 गर्ल्स डिग्री कालिज, सहारनपुर *satyveer171@gmail.com*

डॉ0 विनोद कालरा, अध्यक्षा, हिन्दी विभाग, कन्या महाविद्यालय, जालन्धर. *vinod_kalra66@yahoo.com*

डॉ0 अनामिका, असि0 प्रो0, एन0 के0 बी0 एम0 जी0 पीजी कॉलिज, चंदौसी, *ngelanamika22@gmail.com*

डॉ0 पूजा खन्ना, असि0 प्रो0, मुरादाबाद मुस्लिम डिग्री कॉलिज, मुरादाबाद, *mailme.pujakapoor@rediffmail.com*

डॉ0 कामना कौशिक, असि0 प्रो0ए सी0 एम0 के0 नेशनल पी0 जी0 गर्ल्स कॉलिज, सिरसा हरियाणा, *kamnacmk78@gmail.com*

श्रीमति कीर्थि देवी रामजतन, महात्मा गॉधी इंस्टीटयूट, मोरिश्यस, *kdramjatton@yahoo.com*

- शोध मंथन त्रि–मासिक जर्नल है।
- शोध मंथन में पूर्व प्रकाशित लेख व पत्र प्रकाशित नहीं किये जाते।
- शोध मंथन के प्रबन्ध सम्पादक पूर्व निर्धारित हैं। यथा समय अतिथि सम्पादक चयनित किये जाते हैं।
- प्रकाशित सामग्री का कॉपी राइट जर्नल अनु बुक्स, मेरठ का है।
- अपना शोध पत्र प्रकाशित करवाने के लिये ई–मेल के द्वारा अपने पूर्ण पते के साथ भेजे
- सम्पादकीय समिति का निर्णय अन्तिम होगा।
- **Authors are responsible for the cases of plagiarism.**

Published by JOURNAL ANU BOOKS in support of
KAILBRI INTERNATIONAL EDUCATIONAL TRUST
Printed by D.K. Fine Art Press Pvt. Ltd., New Delhi.

हमारे यहॉ लेख प्रकाशित करने का कोई मूल्य नहीं लिया जाता हैं।

Subscription

In India	Rs. 750.00 प्रति अंक	Rs. 3000.00 वार्षिक
Out of India	$ 75.00 प्रति अंक	$ 300.00 वार्षिक

ISSN: (P) : 0976-5255 (e) : 2454-339X
Impact Factor 8.354 (SJIF)

शोध मंथन

हिन्दी शोध पत्रिका

A Peer Reviewed & Refereed International Journal in Hindi

Vol. XII No. III **July-Sep. 2021**

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan

अनुक्रमणिका

51. भक्तिकाल में रामकाव्य परम्परा
डॉ0 कामना कौशिक 329

52. हिंदी उपन्यासों में किन्नर समाज
डॉ0 राजेंद्र घोडे 338

53. मानव सौन्दर्य "छायावादी काव्य और उपन्यास में तुलनात्मक अध्ययन के रूप में"
डॉ0 निशा गोयल 342

54. वेदों का विभाजनः एक समीक्षात्मक अध्ययन
डॉ. प्रताप चन्द्र राय 352

55. जैन धर्म और पर्यावरण संरक्षण
डॉ0 अनिता जैन प्राचार्या 359

56. मीडिया के सामाजिक सरोकर
डॉ0 गरिमा त्यागी 369

57. नक्सलवाद – ऐतिहासिक विवेचन
डॉ0 संजय कुमार 372

58. कुमाऊँ में संस्कारों की मान्यता – एक ऐतिहासिक विश्लेषण
डॉ0 संजय कुमार पन्त 385

59. महिला आंदोलन एक सतत संघर्ष
मेघा अग्रवाल 393

60. कोरोना काल में कला और संस्कृति की भूमिका और तनाव प्रबन्धन
डॉ0 रुचिमिता पाण्डे 397

61. कला वरासत
डॉ0 अनिता रानी 401

62. भारतीय संस्कृति संगीत एवं कौशल विकास
डॉ0 रश्मि गुप्ता 407

63. प्रो0 रामचन्द्र शुक्ल–कला गुरु के रूप में नवीन कला चेतना का प्रसार
डॉ0 राकेश कुमार सिंह 412
64. राजस्थान में पशु–पक्षियों का चित्रांकन
डॉ0 विभूति शर्मा 417
65. क्रिस्टीन स्वैंटन के बहुलवादी सद्गुणाधारित नीतिशास्त्र की समीक्षा
अंजली शर्मा 425
66. जैन धर्म में अपरिग्रह (असंग्रह) का प्रमाण्यवाद
अपराजिता कुमारी 434
67. विलियम डेविड रॉस के नैतिक अन्तःप्रज्ञावाद की समीक्षा
नेदा परवीन 437
68. पौड़ी गढ़वाल जनपद में जनसंख्या वितरण, घनत्व एवं वृद्धि का भौगोलिक अध्ययन
डॉ0 भरतपाल सिंह 445
69. पश्चिमी चम्पारण जनपद में जनसंख्या वितरण प्रतिरूप
अविनाश प्रकाश 448
70. बस्ती मण्डल में नगरीकरण का स्तर
गणेश त्रिपाठी 463
71. गोरखपुर–बस्ती मण्डल में औद्योगिक फसल गन्ना का प्रतीक अध्ययन (2018–2019)
इंग्लेश यादव 469
72. कुशीनगर जनपद (उ0प्र0) की व्यावसायिक संरचनाः एक भौगोलिक विश्लेषण
मनोज कुमार चौहान 476
73. सिद्धार्थनगर जनपद (उत्तर प्रदेश) में परिवहन मार्गो का वितरण प्रतिरूप
परमानन्द 483
74. शस्य विविधता का मापन कुशीनगर जनपद (उत्तर प्रदेश) का प्रतीक अध्ययन
राघवेन्द्र प्रताप सिंह 491
75. महराजगंज जनपद (उत्तर प्रदेश) में चिकित्सा एवं सवास्थ्य सुविधाओं का स्थानीय वितरण
राकेश कुमार 501
76. जौनपुर जनपद में भूमि उपयोग प्रतिरूप
कु0 सीमा सिंह 511
77. 'सांख्य दर्शन' अनीश्वरवादी नहीं हैः एक विमर्श
डॉ० रंजना अग्रवाल 518

संपादकीय

शोध से प्राप्त तथ्यों को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करने का कार्य शोध पत्र लेखनकर्ता का दायित्व है। शोधकर्ता द्वारा लिखित शोध पत्र को ज्ञानपिपासुओं तक पहुंचाने का कार्य जर्नल (शोध पत्रिका) व पुस्तक प्रकाशक के हाथ में है। गत बारह वर्षो से **शोध मंथन** नित नई ऊचांइयों को छू रहा है और विभिन्न संस्थाओं द्वारा प्रभाजित भी होता रहा है। शोध मंथन एक बहु–विषयी शोध पत्रिका है जो महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर तैयार किये गये शोध पत्रों को शोध के उत्सुक पाठकों तक पहुंचाती है।

पंजाब के कला सरताज प्रोफेसर एस0एल0 पाराशर के ऊपर लिखे डा0 कविता सिंह के शोध पत्र से स्थानीय कलाकारों को विश्व में प्रसिद्धि व पहचान पाने का अवसर मिलता है। कबीर, ज्योतिबाफुले व स्वामी विवेकानन्द जैसे दिग्गज समाज सेवकों के विषय में शोधकर्ताओं ने नवीन बिन्दुओं को तलाश कर अपने शोध पत्र में प्रस्तुत किया है।

बी0एस0टी0सी0 प्रशिक्षार्थियों के आत्मविश्वास, लाकडाउन में पर्यावरण की स्थिति, विकलांगों के लिये किए जा रहे सरकारी–गैर सरकारी प्रयासों, लौह खदानों के श्रमिकों की समस्याओं, बंजारा जनजाति के सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन आदि बहुत से महत्वपूर्ण व अनछुए मुद्दों पर भी शोध पत्र लेखकों ने तथ्यपरक जानकारी संतुलित शब्दों में प्रस्तुत की है।

शोध पत्र लेखन के समय अनुसंधान पद्धति के प्रमुख चरणों का ध्यान रखते हुए लिखे गये शोध पत्र बरबस पाठकों को आकर्षित करते हैं। तीन विषय विशेषज्ञों से प्रकाशनार्थ स्वीकृति प्राप्त होने पर ही शोध पत्र को शोध पत्रिका में ऑनलाइन व ऑफलाइन स्थान दिया जाता है। प्रत्येक क्षेत्र में संदर्भ सूची, लेखन के विभिन्न माध्यम प्रस्तुत किये जाते है, लेकिन शोध मंथन में प्रकाशक द्वारा स्वीकृत मापदण्ड का प्रयोग किया जाता है जिससे कि पत्रिका की गुणवत्ता को कायम रखा जा सके। शोध की रूपरेखा (Abstract) व शोध पत्र अध्ययन बिन्दु (Keywords)को भी शोध पत्र के आरम्भ में प्रस्तुत किया जाता है ताकि वह अन्तर्राष्ट्रीय मानकों को पूरा कर सके।

भविष्य में शोध पत्र लेखक का संक्षिप्त परिचय देने का भी प्रयास किया जा सके, ऐसा विचार सम्पादक मण्डल के समक्ष रखा जायेगा तथा स्वीकृति पश्चात् कार्यान्वयन की दिशा में कदम बढ़ाने का प्रयास है।

शोध पत्रिका व पत्रों से संबंधित आपकी कटु व तथ्यपरक आलोचना का हम सदैव स्वागत करते हैं क्योंकि इससे शोध पत्रिका की गुणवत्ता को निखारने का हमें अवसर प्राप्त होता है।

शुभाकांक्षी

सम्पादक